Department :- Ayurved Samhita & Siddhant

Topic :- **कार्य कारणवाद**

कार्य-कारण-सिद्धांत

- कार्य कारण से उत्पन्न होता हैं| यह कार्य कारण सिद्धांत हैं|

- Cause is that which is invariably precedes the effect provided the antecedent thing is not connected with the effect remotely or

indirectly.

Of all the causes that bring about effect, some are common to many effects they are called as 'Sadharana Karana'.

But some causes are peculiar to the particular effect; the cause may be called as 'Asadharana Karana'. However all factors that exist before Karya cannot be considered as Karana. It should possess the following 3 characteristics to be called

as Karana.

- 1. Purva vritti (Cause should exist prior to effect)
- 2. Niyat (Whenever Karya exists the Karana should exist invariably)
- 3. Ananyathasiddh (Karya cannot take place without Karana.)

Types of Karana

- According to Nyaya Philosophy, they are
- of 3 types of Karana.3
- 1. Samavayi Karana – Intimate
- 2. Asamavayi Karana – Non intimate
- 3. Nimitta Karana – Instrumental

Samavayi Karana – Upadana Karana

(Inherent Material, Intimate Cause): It is that in which the effect produced is inherent, i.e. so intimately connected or identical with it, that it cannot be separated from the cause without losing its own existence.

- Inseparable union with which the effect is produced is called Samavayi Karana. Nyaya Darshana believes that destruction of Karya takes place due to destruction of its Upadana Karana.

- Asamavayi Karana – (Non intimate or non inherent cause): The cause which is inseparably united in the same object with the effect is called Asamavayi Karana.

This Asamavayi Karana exists in the same object along with the Samavayi Karana of its own effect. In Tarka Sangraha it has been stated that the cause which is inseparably united with the same object with the effect or with the cause is Asamavayi Karana. Though Asamavayi Karana itself is not Samavayi Karana, it is closely connected with the cause (Karana)

- Nimitta Karana – (Instrumental Cause or Occasional Cause): The remaining essential causes other than these two are called 'Nimitta Karana'.
- Nimmita Karana is different from Samavayi and Asamavayi Karanas and is the instrumental cause only. It helps the Samavayi and Asamavayi Karana in the production (Creation of Karya). After production of Karya this Karana detach from Karya. Such type of cause is called Nimitta Karana. Only Samavayi and Asamavayi Karana are not sufficient, other causes which are useful indirectly are known as Nimitta Karana.

Karya (Effect) in Indian Philosophy

According to Nyaya philosophy effect means anything or event which had no existence before it's actually coming into being. By its coming into being, it brings about to an end to its previous non being (Pragbhava). The effect is the counter entity of antecedent negation.

Vaisheshika hold that there is negation of effect prior to its production so the effect becomes the counter entity of the antecedent negation. Antecedent negation is the negation of the effect before its production.

कारण का स्वरूप

- "कार्यनियतपूर्ववृत्तिकारणं|" (तर्कसंग्रह)

अर्थात् जो कार्य से निश्चित रूप में पूर्ववर्ती या पहले आये, उसे कारण कहते हैं|

- "कार्योत्पादकत्वं कारणं|" (सप्तपदार्थी)

अर्थात् जो कार्य को उत्पन्न करे, वह कारण हैं|

- "तत्र कारणं नाम तद् यत् करोति
  स एव हेतुः स कर्ता|" (च.वि.8/69)

जो स्वतन्त्र रूप से किसी कार्य को करता हैं, उसे कारण कहते हैं| वही हेतु हैं और वही कर्ता हैं|

कारण के भेद

कारण तीन प्रकार का होता हैं-

1.समवायिकारण

2.असमवायिकारण

3.निमित्तकारण

1.समवायिकारण-

"यत्समवेत कार्यमुत्पद्यते तत्समवायिकारणं|"

अर्थात् जो समवेत रहते हुए कार्य उत्पन्न होने का कारण होता हैं| वह समवायिकारण होता हैं|

जैसे- वस्त्र का समवायिकारण तन्तु हैं|

2.असमवायिकारण-

"कार्येण कारणेन वा सहैकस्मिन्नर्थे समवेतत्वे सति यत्कारणं तदसमवायिकारणं|"

अर्थात् जो स्वयं समवायि ना हो किन्तु जिसके कार्य या कारण के साथ एक ही वस्तु में समवेत होने से ही कार्य की उत्पत्ति होती हैं, उसे असमवायिकारण कहते हैं|

जैसे- तंतुओं का संयोग|

3.निमित्तकारण-

"तदुभयभिन्नं कारणं निमित्तकारणं|"

अर्थात् कार्योत्पत्ति में जो कारण समवायिकारण व असमवायिकारण से भिन्न हो, उसे निमित्तकारण कहते हैं|

- यह कारण कार्योत्पत्ति में सहायक होता हैं|

कार्य का स्वरूप

- "कार्यं प्रागभावप्रतियोगि|" (तर्कसंग्रह)

कार्य प्रागभाव का प्रतियोगी होता हैं| उत्पन्न होने से पूर्व किसी वस्तु का अभाव प्रागभाव कहलाता हैं|

- "कार्यं तु तद् यस्याभिनिर्वृत्तिमभिसंधाय कर्ता प्रवर्तते|" (च.वि.8/72)

अर्थात् कर्ता जिस कार्य को करने के लिए अपनी कर्तव्यता बुद्धि को स्थिर कर प्रवृत होता हैं, वह कार्य हैं|

कार्य कारणवाद के सिद्धान्त

- उत्पन्न होने से पूर्व कार्य था या नहीं? था तो किस रूप में और कहां था? अपने वर्तमान रूप में कैसे आया?
- यदि नहीं था तो कहां से आया? कैसे आया?
- क्या कारण ही कार्य में परिवर्तित हो गया? या कार्य उत्पन्न करने के बाद भी कारण ने स्वतन्त्र अस्तित्व बनाए रखा?
- इन सब के समाधानों में दो ही सिद्धांत सर्वाधिक महत्वपूर्ण हुए है-

1.सत्कार्यवाद

2.असत्कार्यवाद

सत्कार्यवाद

- उत्पन्न होने से पूर्व कार्य की सत्ता कारण में अव्यक्त रूप से रहती हैं, इस सिद्धांत को सत्कार्यवाद कहते हैं|

- सांख्य दर्शन सत्कार्यवाद को मानता हैं| सांख्य के अनुसार कार्य व कारण दोनों अभिन्न हैं| ये दोनों अवस्था विशेष मात्र हैं अर्थात व्यक्तावस्था कार्य हैं तथा अव्यक्तावस्था कारण हैं|

- सांख्य दर्शन के इस सिद्धांत को परिणामवाद भी कहा जता हैं|

- आयुर्वेद भी सत्कार्यवाद के सिद्धांत को ही स्वीकारता हैं|

सत्कार्य की सिद्धि

सांख्यकारिका में निम्न तथ्य दिए गए हैं-

"असदकरणादुपादानग्रहणात् सर्वसम्भावाभावात्|
शक्तस्य शक्यकरणात् कारणाभावाच्च सत्कार्यम्|"

1. असदकरणात्- असत् से सत् की उत्पत्ति नहीं हो सकती| जो पदार्थ पूर्व में ही अपने कारण में अव्यक्त रूप से वर्तमान रहता हैं| वही उससे व्यक्त होता हैं|

जैसे- तिल से तेल व दही से घी|

2. उपादानग्रहणात्-

"उपादाननियमात|" (सां.द.)

उपादान कारण के नियम से सत कारण से सत कार्य की उत्पत्ति होती हैं| अथवा किसी वस्तु की उत्पत्ति के लिए केवल विशिष्ट साधनों का उपयोग किया जाता हैं|

जैसे- दही बनाने के लिए उसके उपादान कारण दूध का ही ग्रहण किया जाता हैं|

3. सर्वसम्भावाभावात्-

"सर्वत्र सर्वदा सर्वासंभवात|" (सां.द.)

अर्थात् सब काल में प्रत्येक कारण से प्रत्येक कार्य की उत्पत्ति असंभव हैं| अथवा प्रत्येक कारण से निश्चित कार्य की उत्पत्ति होती हैं| प्रत्येक कार्य का अपना एक उपादान कारण होता हैं|

जैसे- कुचला के बीज से आमलकी की उत्पति नहीं होना तथा भल्लातक के बीज से आम्र की उत्पत्ति नहीं होना|

4. शक्तस्य शक्यकरणात्- जिस कार्य के उत्पादन में जो कारण शक्त अर्थात् समर्थ होता हैं, वही कारण अपनी शक्ति से सम्बंधित उसी कार्य को उत्पन्न करता हैं|

जैसे- पीपल का उन्नत बीज पीपल को उत्पन्न करने में समर्थ हैं|

5. कारणभावात्- कार्य और कारण वास्तव में एक हैं| कार्य और कारण दोनों एक वस्तु की दो अवस्थाए हैं| अव्यक्तावस्था कारण होता हैं तथा व्यक्तावस्था कार्य होता हैं|

असत्कार्यवाद

- न्याय, वैशेषिक ने असत्कार्यवाद या आरम्भवाद को माना हैं|
- असत्कार्यवाद के अनुसार कारण में कार्य की सत्ता उत्पत्ति से पूर्व नहीं होती हैं| कार्य उत्पन्न होने के बाद ही अस्तित्व में आता हैं| कार्य सर्वथा एक नवीन रचना हैं|
- असत्कार्यवाद कार्य की उत्पत्ति के आरम्भवाद को मानता हैं, इसलिए इसे आरम्भवाद भी कहते हैं

आयुर्वेद में कार्य कारणवाद

- आयुर्वेद में सत्कार्यवाद के व्यवहारिक स्वरूप का वर्णन किया गया हैं|

- "न ह्येको वर्तते भावो वर्तते नाप्याहेतुक:" अर्थात् समस्त व्यक्त भावों को सहेतुक कहकर कार्यकारणवाद की पुष्टि की गई हैं|

- त्रिसूत्र आयुर्वेद में हेतु व लिंग का उल्लेख कर कार्यकारणवाद की व्याख्या की हैं|

- **पुरुषोत्पति में कार्यकारणवाद -**

✓ चरक संहिता में यज्ज:पुरुषीयाध्याय में स्पष्ट किया गया हैं जिन भावों की प्रशस्तगुणता से पुरुषोत्पति होती हैं, उन्हीं की विगुणता से रोगोत्पति होती हैं| अत: यहां पुरुष व रोग की उत्पति में कारण माना गया हैं|

✓ जीवित शरीर को कर्मपुरुष या षडधात्वात्मक पुरुष कहा गया हैं| इस कर्मपुरुष का कारण पंचमहाभूत व आत्मा हैं|

- **आयुर्वेद में रोगोत्पति में कार्यकारणवाद-**

✓ रोग बिना दोष के उत्पन्न नहीं हो सकता है| अत: शारीरिक व मानसिक दोषों को समवायिकारण माना हैं|

✓ रोगोत्पति में दोष दुष्य का संयोग होना असमवायिकारण माना गया हैं|

✓ असात्म्येन्द्रिय संयोग, प्रज्ञापराध व परिणाम को रोगोत्पति में निमित्तकारण माना गया हैं|

- आयर्वेद को “सर्वपारिषद शास्त्र” कहा गया हैं| अत: इसमे असत्कार्यवाद के भी उदाहारण विद्यमान हैं|

- आयुर्वेद में विकृति-विषम-समवेत संयोग असत्कार्यवाद पर ही आधारित हैं|

  जैसे-

✓ घृत व शहद के सम संयोग से विष द्रव्य की उत्पति हो जाती हैं| जबकि दोनों स्वगुण में अमृततुल्य हैं|

✓ सन्निपातज व्याधियों में कुछ लक्षण होते हैं जो त्रिदोष के लक्षणों से भिन्न होते हैं|

THANK YOU